IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का उनकी सीखने की क्षमता पर प्रभाव : मेरठ जिले के गाँव शफियाबाद लोटी के सरकारी प्राथमिक विद्यालय का सूक्ष्म स्तरीय केस अध्ययन

मनीषा चपराना
शोध छात्रा,
अर्थशास्त्र विभाग,
एन०ए०एस० कॉलेज, मेरठ

डॉ० चिन्मयी चतुर्वेदी
प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
एन०ए०एस० कॉलेज, मेरठ

सारांश

''सबसे गरीब घरों के बच्चों के स्कूल से बाहर होने की संभावना सबसे अमीर घरों के बच्चों की तुलना में चार गुना अधिक है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमानताएँ भी अधिक बनी हुई है।''
–यूएनडीपी

सतत् विकास लक्ष्यों का लक्ष्य चार शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित हैं। शिक्षा की गुणवत्ता कई कारकों पर निर्भर करती है– सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक। इन सभी कारकों में छात्र की सीखने की क्षमता को उसके सामाजिक एवं आर्थिक कारक यथा माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय, आय, जाति इत्यादि अधिक प्रभावित कर सकते हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सरकारी स्कूल महत्वपूर्ण हिस्सा है जो सामान्यतः समाज के वंचित वर्ग की शिक्षा की आवश्यकताओं को प्राप्त करने का माध्यम है। प्रस्तुत पत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के शफियाबाद लोटी गाँव के सरकारी प्राथमिक विद्यालय का सूक्ष्म स्तरीय केस अध्ययन है, जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक कारकों का छात्रों की सीखने की क्षमता पर प्रभाव को आंकलित करने का प्रयास है।

मूल शब्द : विद्यार्थी, सामाजिक आर्थिक स्थिति, सरकारी स्कूल।

प्रस्तावना: लक्ष्य 4 के माध्यम से सतत विकास लक्ष्य ''समान और समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करते हैं और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देते हैं।'' शिक्षा का व्यक्ति, समाज और देश के जीवन की गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्राथमिक शिक्षा वह रचनात्मक स्तर है जिसका सीखने की संभावना में सुधार और उत्तरदायी नागरिक वर्ग के विकास पर जबरदस्त सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

भारत में स्कूली शिक्षा प्रणाली में सरकारी और निजी स्कूलों को मिलाकर कई परतें हैं। इनमें से सरकारी स्कूलों को केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। निजी स्कूल या तो स्ववित्तपोषित होते हैं या सरकार से अनुदान प्राप्त करते हैं। हालाँकि, महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की शिक्षा के लिए सरकारी स्कूल सबसे महत्वपूर्ण है। 1964 से यह सुझाव दिया जाता रहा है कि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 6 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जाना चाहिए। किन्तु शिक्षा पर सरकार द्वारा किया जा रहा खर्च चिंता का विषय है। वर्ष 2022–23 के लिए शिक्षा पर बजटीय अनुमान सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 2.9 प्रतिशत है।[1] इन सीमित संसाधनों के साथ विद्यालय छात्रों की क्षमताओं का बेहतर विकास करने में पिछड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विभिन्न घटकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रस्तुत पत्र सरकारी स्कूलों के छात्रों की सीखने की क्षमता और उनकी पारिवारिक स्थिति के अर्न्तसम्बन्ध को समझने का सूक्ष्म प्रयास है।

साहित्य की समीक्षाः

अग्रवाल मानसी (6 जून 2020), ''स्कूलिंग की बदलती गतिशीलता : निजी और सरकारी स्कूलों पर एक तुलनात्मक अध्ययन'' यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सरकारी और निजी स्कूलों में अपने बच्चों को भेजने के प्रति माता–पिता भी एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करते हैं। पेपर से निष्कर्ष निकलता है कि माता–पिता सरकारी स्कूलों की अपेक्षा निजी स्कूलों को अधिक महत्त्व देते हैं। इसका कारण आर्थिक स्थिति और शिक्षक की गुणवत्ता है। पिछले कुछ वर्षों में समग्र छात्रों के कल्याण, प्रभावी पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन में सरकारी स्कूलों की बेहतर स्थिति है।

डुडाइट जोलिटा (3 जुलाई, 2016), ''छात्रों की सीखने की उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक एवं घरेलू वातावरण का प्रभाव'' पेपर प्रस्तुत करता है कि छात्रों की सीखने की उपलब्धियों में शैक्षिक वातावरण एक महत्त्वपूर्ण कारक है। यह विद्यार्थियों के सीखने को प्रभावित करता है। घरेलू वातावरण और सामाजिक, आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के सीखने को प्रभावित करता है। पेपर का उद्देश्य छात्रों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति और घरेलू वातावरण के सीखने की उपलब्धि पर प्रभाव को जानना है। प्रस्तुत पेपर में मात्रात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है।

गोबेना जेमीहु (17 अक्टूबर, 2021), ''शिक्षा और व्यवहार विज्ञान कॉलेज, हरमाया विश्वविद्यालय, इंथियोपिया में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का प्रभाव'' प्रस्तुत पेपर छात्रों की उपलब्धि पर पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति के प्रभाव की जाँच करता है। अध्ययन का उद्देश्य बच्चों को स्कूल के प्रति प्रोत्साहित करना है। प्रत्येक परिवार तक शिक्षा की पहुँच होनी चाहिए। पेपर से निष्कर्ष निकलता है कि स्कूली शिक्षा से अपनी क्षमता को बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को अपने परिवार से पूर्ण समर्थन की आवश्यकता होती है। अतः परिवार बच्चों की उपलब्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पेपर से निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा प्राप्ति में सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान किया जाता है और बच्चों को सक्षम बनाने के लिए, निम्न आर्थिक स्थिति के लिए, सामाजिक–आर्थिक नीतियों को तैयार किया जाना चाहिए।

नूरसुमसु सैमुअल, विष्णु, रामवती अनीसा (अक्टूबर 2021), ''सभी के लिए शिक्षा, इंडोनेशिया में कोविड–19 महामारी के दौरान सीखने की व्यस्तता पर सामाजिक, आर्थिक, असमानता के प्रभाव का आंकलन'' यह पेपर प्रस्तुत करता है कि कोविड़–19 के दौरान सीखने पर सामाजिक, आर्थिक, असमानता का इंडोनेशिया में प्रभाव। पेपर बताता है कि विभिन्न क्षेत्रों के संदर्भ में स्कूलों की गुणवत्ता भिन्न है। सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता निजी स्कूलों की तुलना में कम है। ऑनलाइन सीखने की व्यस्तता और सामाजिक–आर्थिक असमानता में व्यापक अंतर है। पेपर से निष्कर्ष निकलता है कि सरकार को शिक्षा की सीखने की गुणवत्ता में सुधार के लिए सटीक नीतियाँ बनानी चाहिए।

जितेन्द्र, सिंह, नेहा; कोठारी राहिल; सगिनी हर्ष; (5 मई 2021), ''ग्रामीण भारत में शिक्षा की गुणवत्ता के लिए एंड्रॉयड का अनुप्रयोग'' भारत में ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता में सुधारने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक अनुप्रयोग किया गया। असर रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण भारत में पाँचवी कक्षा के बच्चों का स्कूल में नामांकन बढ़ा परन्तु ये विद्यार्थी दूसरी कक्षा की किताब पढ़ने में समर्थ नहीं है। पेपर प्रस्तुत करता है कि ग्रामीण स्कूलों में पर्याप्त किताबें नहीं हैं। जबकि ऑनलाइन लर्निंग की ओर ध्यान दिया जा रहा है, एंड्रॉयड के द्वारा छात्रों को उनकी आयु के अनुसार अध्ययन के लिए सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। आधारभूत शिक्षा प्राप्त करना एंड्रॉयड पोर्टल द्वारा आसान है और विद्यार्थी आसानी से सीख सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्यः वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों का सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं उनकी सीखने की क्षमता में अर्न्तसम्बन्ध को जानना है।

परिकल्पनाः विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अनुसंधान क्रियाविधिः प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। मेरठ जिले के गाँव शफियाबाद लोटी के सरकारी स्कूल में शोधकर्त्ताओं द्वारा प्राथमिक समंक एकत्र किया गया। स्कूल का नाम आदर्श प्राथमिक स्कूल है। सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उनके सीखने की क्षमता पर प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी एकत्र करने के लिए छात्रों द्वारा प्रश्नावली भरवाकर एवं उनकी हिंदी और गणित की परीक्षा लेकर– समंक एकत्र किया गया। विद्यार्थियों द्वारा कुल 45 प्रश्नों की प्रश्नावली भरवाई गई, जिसमें से केवल आठ प्रश्नों को ही पेपर में शामिल किया गया। 8 प्रश्नों में से 6 प्रश्न क्लोज एड़ेड और 2 प्रश्न ओपन एड़ेड हैं।

अनुसंधान डिजाइनः वर्तमान प्रस्तुत पेपर एक सूक्ष्म स्तरीय केस स्टडी है। डेटा का विश्लेषण करने के लिए साधारण प्रतिशत पद्धति एवं प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग किया गया है।

नमूना आकार और क्षेत्रः अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जिले के शाफियाबाद लोटी गांव है। शाफियाबाद लोटी गाँव खरखौदा ब्लॉक में है। यह जिला मुख्य कार्यालय, मेरठ से दक्षिण की ओर 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कुल भौगोलिक क्षेत्र 785.105 हेक्टर है। केस स्टडी के उद्देश्य से सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा पाँच में पढ़ने वाले 30 छात्रों को शामिल किया गया।

अध्ययन अवधिः अध्ययन की अवधि फरवरी 2021 के दौरान आयोजित की गई।

छात्रों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमिः लिंग, जाति, धर्म, परिवार का प्रकार परिवार के सदस्यों की संख्या, निवास स्थान, व्यवसाय, शिक्षा आदि से सम्बन्धित चरों के संयोजन से सामाजिक आर्थिक स्थिति पर अध्ययन किया गया है।

तालिका : 1 छात्रों का आयु के आधार पर वर्गीकरण (छ त्र 30)

कारक	विवरण	कुल छात्र	लड़के द त्र 16	लड़कियाँ दत्र 14
आयु	10–12	1 (3.33)	1 (6.25)	0
	13–14	9 (30)	6 (37.5)	3 (21.42)
	14–15	20 (66.66)	9 (56.25)	11 (78.57)

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित। (कोष्ठक में प्रतिशत दिए गए हैं।)

तालिका 1 से यह देखा जा सकता है कि 67 प्रतिशत छात्र उस आयु वर्ग से हैं जहाँ उन्हें प्राथमिक शिक्षा पूरी कर लेनी चाहिए थी लेकिन वे अभी भी प्रारंभिक स्तर पर हैं जिसमें 55 प्रतिशत बालिकाएँ हैं। प्रतिदर्श की कुल छात्राओं में 78 प्रतिशत इसी वर्ग से हैं। शिक्षा के अधिकार लागू होने के डेढ़ दशक बाद भी देश के समृद्ध क्षेत्र के ग्रामीण अंचल में शिक्षा के प्रसार के सन्दर्भ में यह स्थिति नीति निर्माताओं के लिए सोचनीय विषय है।

तालिका 2 छात्रों की धार्मिक स्थिति

कारक	विवरण	कुल छात्र	लड़के	लड़कियाँ	कुल छात्रों का प्रतिशत	लड़कों का प्रतिशत	लड़कियों का प्रतिशत
धर्म	हिन्दू	10	4	6	33.33	33.33	33.33
	मुस्लिम	20	8	12	66.67	66.67	66.67

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 2 में 33.33 प्रतिशत हिंदू और 66.67 प्रतिशत मुस्लिम छात्र सरकारी स्कूल में पढ़ते है। आश्चर्यजनक रूप से नमूने में दोनों धर्मों में लड़कों और लड़कियों का समान वितरण है।

तालिका 3 छात्रों का जाति अनुसार वर्गीकरण

कारक	विवरण	कुल छात्र	लड़के	लड़कियाँ	कुल छात्रों का प्रतिशत	लड़कों का प्रतिशत	लड़कियों का प्रतिशत
धर्म	सामान्य						
	ओबी0सी	22	8	14	73.33	66.67	77.77
	अनुसूचित	8	4	4	26.67	33.33	22.22
	अनुसूचित जनजाति	–	–	–	–	–	–
कुल		30	12	18	100	100	100

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 3 इंगित करती है कि प्रतिदर्श में एक भी छात्र सामान्य जाति से नहीं है। अधिकांश छात्र अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं जिसमें छात्रों की संख्या अधिक है। कुल प्रतिदर्श में भी छात्राएँ 60 प्रतिशत हैं।

तालिका 4: विद्यार्थियों परिवार का प्रकार

कारक	विवरण	कुल छात्र	लड़के	लड़कियाँ	कुल छात्रों का प्रतिशत	लड़कों का प्रतिशत	लड़कियों का प्रतिशत
परिवार का प्रकार	संयुक्त	26	10	16	86.67	83.33	88.88
	एकल	4	2	2	13.33	16.66	11.11
कुल		30	12	18	100	100	100

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 5: विद्यार्थियों के परिवार का आकार

कारक	विवरण	कुल छात्र	लड़के	लड़कियाँ	कुल छात्रों का प्रतिशत	लड़कों का प्रतिशत	लड़कियों का प्रतिशत
परिवार का आकार	1–5	1	1	.	3.33	5.88	.
	6–10	20	12	8	66.67	70.58	61.53
	11–15	7	3	4	23.33	17.65	30.76
	15 से अधिक	2	1	1	6.67	5.88	7.69
कुल		**30**	**17**	**13**	**100**	**100**	**100**

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 4 एवं 5 में इंगित के अनुसार नमूने में अधिकांश विद्यार्थी संयुक्त परिवार में रहते हैं। 67 प्रतिशत विद्यार्थियों के परिवार का आकार 6 से 10 व्यक्तियों का है। 2 विद्यार्थियों के परिवार में 15 से अधिक सदस्य हैं।

तालिका 6: विद्यार्थियों के घर की स्थिति

कारक	विवरण	विद्यार्थी	लड़के	लड़कियाँ	प्रतिशत
घर की स्थिति	कच्चा	8	4	4	26.67
	पक्का	22	10	12	73.33
कुल		30			100

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 6: में कच्चे घरों में रहने वाले 26.67 प्रतिशत छात्रों और पक्के घरों में रहने वाले 73.33 प्रतिशत छात्रों को दर्शाती है।

तालिका 7: विद्यार्थियों के माता–पिता की शैक्षिक स्थिति

कारक	विवरण	पिता	माता	पिता की शैक्षिक स्थिति का प्रतिशत	माता की शैक्षिक स्थिति का प्रतिशत
शैक्षिक स्थिति	निरक्षर	2	10	6.67	33.33
	प्राथमिक	15	12	50	40
	माध्यमिक	2	4	6.67	13.33
	हाईस्कूल	4	.	13.33	.
	इण्टरमीडिएट	7	3	23.33	10
	स्नातक	.	.	.	.
	परास्नातक	.	1	.	3.33
कुल		30	30	100	100

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 7 से पता चलता है कि चयनित छात्रों में से 40 प्रतिशत की माताएँ और 50 प्रतिशत के पिता प्राथमिक स्तर तक शिक्षित हैं। शेष 23 प्रतिशत छात्रों के पिता ने इंटरमीडिएट, 13 प्रतिशत ने हाईस्कूल और 6 प्रतिशत ने मिडिल स्कूल की पढ़ाई पूरी की है। 33 प्रतिशत छात्रों की माताएँ निरक्षर हैं, 13 प्रतिशत ने मिडिल स्कूल की पढ़ाई पूरी की है और 3 प्रतिशत स्नातकोत्तर हैं।

तालिका 8 माता–पिता की व्यवसायिक स्थिति

कारक	विवरण	पिता	माता	पिता की शैक्षिक स्थिति का प्रतिशत	माता की शैक्षिक स्थिति का प्रतिशत
शैक्षिक स्थिति	खेती	1	12	3.33	40
	स्वयं रोजगार	1	.	3.33	
	डेरी	1	.	3.33	.
	मजदूरी	22	5	73.33	16.66
	कुशलश्रम	5	1	16.67	3.33
	अकुशल श्रम	.	.	.	.
	योग्य नही	.	12	.	40
कुल		30	30	100	100

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 8 के अनुसार 73.3 फीसदी छात्रों के पिता मजदूर हैं, 40 प्रतिशत विद्यार्थियों की माताएँ खेती करती हैं। 16 प्रतिशत छात्रों के पिता और माता क्रमशः कुशल श्रमिक और मजदूर हैं।

तालिका 9 सगे भाई–बहनों की शैक्षिक स्थिति

कारक	विवरण	भाई की शिक्षा	बहन की शिक्षा	भाई की शिक्षा का प्रतिशत	बहन की शिक्षा का प्रतिशत
शैक्षिक स्थिति	प्राथमिक	23	21	76.67	70
	माध्यमिक	4	5	13.33	16.67
	हाईस्कूल	1	2	3.33	6.67
	इण्टरमीडिएट	1	2	3.33	6.67
	स्नातक	1	.	3.33	.
	परास्नातक	.	.	.	.
कुल		30	30	100	100

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 10 विद्यार्थियों का होमवर्क में सहायता

कारक	विवरण	विद्यार्थी	प्रतिशत
होमवर्क में सहायता	पिता	14	46.67
	माता	3	10
	भाई	3	10
	बहन	8	26.67
	अन्य	2	6.67
कुल		30	100

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका 10 प्रस्तुत करती है कि 46.67 प्रतिशत छात्रों की माता–पिता द्वारा घर पर होमवर्क करने में मदद मिलती है। 10 प्रतिशत छात्रों को घर पर ग्रहकार्य पूरा करने में उनकी माताओं से मदद मिलती है। 10 प्रतिशत छात्रों को ग्रहकार्य पूरा करने में भाईयों द्वारा मद्द मिलती है। 26.67 प्रतिशत छात्रों को होमवर्क करने में बहनों द्वारा मदद मिलती है। 6.67 प्रतिशत छात्रों को घर पर होमवर्क करने में अन्य से मद्द मिलती है।

समंको का विश्लेषण

पेपर इस परिकल्पना को साबित करने का प्रयास करता है कि सामाजिक आर्थिक स्थिति का छात्रों की सीखने की क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इस उद्देश्य के लिए चयनित छात्रों को उनकी सीखने की क्षमता की जांच करने के लिए अंग्रेजी और गणित की परीक्षा दी गई। प्राप्त अंकों को आश्रित चर माना गया और उपरोक्त सामाजिक आर्थिक चरों को स्वतंत्र माना गया है।

तालिका 11

Regression Statistics	
Multiple R	0.45323089
R Square	0.20541824
Adjusted R Square	-0.2127827
Standard Error	1.66983672
Observations	30

उपरोक्त तालिका में गुणज r 0.45323089 मध्यम सकारात्मक रैखिक संबंध को इंगित करता है। आर वर्ग 0. 20541824 है, जिसका अर्थ है कि प्रतिक्रिया चर में केवल 20.54: भिन्नता को स्वतंत्र चर द्वारा समझाया गया है। प्रतिगमन की मानक त्रुटि 1.66983672 है, जिसका अर्थ है कि औसतन, अनुमानित मान प्रेक्षित मानों से लगभग 1.67 इकाई दूर हैं।

ANOVA

	df	SS	MS	F	Significance F
Regression	10	13.69626101	1.369626101	0.49119508	0.875248886
Residual	19	52.97873899	2.788354684		
Total	29	66.675			

	Coefficients	Standard Error	t Stat	P-value	Lower 95%	Upper 95%	Lower 95.0%	Upper 95.0%
Intercept	0.88482326	6.569849311	0.134679385	0.89428185	-12.86602938	14.6356759	-12.86602938	14.63568
GENDER	0.1606532	0.870438518	0.184565825	0.855525328	-1.661195552	1.982501959	-1.661195552	1.982502
CASTE	0.41038052	1.388812824	0.295490158	0.770824449	-2.496438128	3.317199169	-2.496438128	3.317199
RELIGION	0.47343438	1.44817768	0.326917328	0.747304516	-2.557636341	3.504505096	-2.557636341	3.504505
TYPE OF HOUSE	0.8129966	0.851645613	0.95461843	0.351759428	-0.969518156	2.595511352	-0.969518156	2.595511
TYPE OF FAMILY	1.16376746	1.412149533	0.824110644	0.42010216	-1.791895481	4.119430402	-1.791895481	4.11943
NO. OF FAMILY MEMBERS	0.16381352	0.342098306	0.47884925	0.63751042	-0.552206467	0.879833501	-0.552206467	0.879834
fathers educational status	-0.1618146	0.298230006	-0.542583233	0.593724795	-0.786017177	0.462387975	-0.786017177	0.462388
MOTHER'S EDUCATIONAL STATUS	-0.1504341	0.139585189	-1.077722522	0.29465108	-0.44258926	0.141721056	-0.44258926	0.141721
FATHER'S OCCUPATION	-0.1035467	0.380373459	-0.272223682	0.788386332	-0.899677463	0.692584136	-0.899677463	0.692584
mother's occupation	0.51405491	0.40577538	1.266845975	0.220520148	-0.335242724	1.363352538	-0.335242724	1.363353

गुणांक का पी–मान शून्य परिकल्पना का परीक्षण करता है कि गुणांक शून्य के बराबर है, जिसका अर्थ है कि आश्रित चर पर स्वतंत्र चर का कोई प्रभाव नहीं है। एक छोटा पी–मान (आमतौर पर 0.05 से कम) का मतलब है कि शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर सकते हैं और निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आश्रित चर पर स्वतंत्र चर का महत्वपूर्ण प्रभाव है।

उपरोक्त तालिका में कोई भी प्रतिगमन गुणांक 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। किसी भी स्वतंत्र चर का जनसंख्या में आश्रित चर पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है।

यह निष्कर्ष सामान्य धारणाओं के विपरीत है लेकिन एक महत्वपूर्ण अवलोकन है। लगभग सभी बच्चे जो सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं समान सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि आते हैं – यानी विशेष रूप से आय, रहने की स्थिति और माता–पिता की शिक्षा। आदर्श रूप से स्कूलों में विविध सामाजिक और आर्थिक स्थिति वाले बच्चे होने चाहिए, ताकि बच्चों को सामाजिक–आर्थिक विविधता का अनुभव मिल सके। लेकिन यह कठोर वास्तविकता है कि सरकारी स्कूल शनैः शनैः अब गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों का स्कूल बन गए हैं । सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माता–पिता, शिक्षा के निम्न स्तर और आजीविका की कठिनता के कारण, बच्चों को प्रभावी शैक्षणिक सहायता प्रदान करने में मुश्किल से सक्षम हैं। इसके अलावा, यह भी एक तथ्य है कि बच्चे घरेलू कामों में लगे रहते हैंद्य

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्कूल का माहौल – कक्षा कक्ष और कक्षा कक्ष के बाहर शिक्षण, सीखने की प्रक्रिया शिक्षा की गुणवत्ता के निर्धारक हैं – जिन्हें प्राप्त अंकों के रूप में मापा जाता है। इसलिए, नीति निर्माताओं और शैक्षिक प्रशासन के अधिकारियों को किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में अकादमिक इनपुट पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। स्कूल परिसर में कक्षा कक्ष के अंदर और बाहर शिक्षकों की उपलब्धता, शिक्षण–अधिगम वातावरण और प्रक्रिया गुणवत्ता की कुंजी है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल मानसी (6 जून 2020), ''स्कूली शिक्षा की बदलती गतिशीलता, निजी और सरकारी स्कूलों का तुलनात्मक अध्ययन'' प्श्रड–च्ए अ०7ए द०3ए श्रनसलए ‰छरू2236.269ॅ
2. नुरसुमसु सेमुएल, विष्णु: रामवती, अनीसा, (अक्टूबर 2021), ''सभी के लिए शिक्षा इंडोनेशिया में कोविड–19 महामहारी के दौरान सीखने की व्यस्तता पर सामाजिक आर्थिक असमानता के प्रभाव का आकलन करना।'' ई आर आई ए चर्चा पत्र श्रृंखला नवम्बर 408, ईयर आईए –डीपी 2021–41
3. डूडाइट, लोलिता, (3 जुलाई 2016), ''विद्यार्थियों की सीखने की उपलब्धियों पर सामाजिक आर्थिक घरेलू वातावरण का प्रभाव'' वॉल्यूम–7, ‰छरू2236.269ॅ
4. गोबेना, अवेरा जेमीहु; 17 अक्टूबर 2018, ''शिक्षा और व्यवहार विज्ञान के कॉलेज में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव, हरमाया विश्वविद्यालय, पूर्वी इथियोपिया'' खंड 7, संख्या–3, 2018, 207–2022
5. फ्रैंक फोंसेका, ब्रोअर मार्कस, ''सामाजिक आर्थिक असमानता और शैक्षिक परिणाम'' ‰छ 2366.1631ए चह छव० 1.13
6. अहार्वो एच (2009), ''किसुमू पूर्व जिला केन्या में सार्वजनिक मिश्रित दिन माध्यमिक विद्यालयों में छात्र शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ाने वाले कारक
7. जितेन्द्र, सिंह नेहा, कोठारी राहिल, सगिनी हर्ष; (5 मई 2021), ''ग्रामीण भारत में शिक्षा की गुणवत्ता के लिए एंड्रॉयड का अनुप्रयोग'', वॉल्यूम–11, ‰छ छव० 2249.555ॅ द्य क्व्प् रू 10०36106ध्परंत
8. **https://www.researchgate.net**
9. **https://www.redalyc.org**
10. **decd.illibrary.org/**
11. **https://www.cancer.gov.>def**
12. **http://www.up.nic.in**